

## ध्रुवीय भालू की मौतें बढ़ते तापमान का संकेत

हाल ही में उत्तरी ध्रुव के दूरांचल स्वालवार्ड में ध्रुवीय भालू की हुई मौत को पर्यावरण विज्ञानियों ने चर्चा में ला दिया है। भालू की मौत का कारण भूख माना जा रहा है।

यह भालू बर्फ की ठोस सतह के नीचे स्थित

झीलों में रहने वाली सील मछली का शिकार करके खाता है। लेकिन उत्तरी ध्रुव पर बढ़ते तापमान के कारण बर्फ तेज़ी से पिघल रही है, इस कारण सील मछली समेत अन्य जीव-जंतु या तो विलुप्ति की कगार पर पहुंच गए हैं अथवा इन जीवों ने अपने आवास स्थल बदल दिए हैं। लिहाज़ा कई दिनों की तलाश के बाद भी जब भालू को भोजन नहीं मिला तो उसकी मौत हो गई। ध्रुवीय भालू की प्रकृति व आचरण के विशेषज्ञ डॉ. इयान स्टर्लिंग ने इस मौत को जलवायु परिवर्तन का स्पष्ट संकेत माना है। क्योंकि इसी कारण उत्तरी ध्रुव पर बर्फ तेज़ी से पिघल रही है। नतीजतन सीलें खत्म हो रही हैं और आहार के अभाव में भालू मर रहे हैं।

ध्रुवीय भालू की स्थिति आर्कटिक सागर के क्षेत्र में भी खराब है। इस सागर में बर्फ अप्रत्याशित ढंग से पिघल रही है। इस कारण इन ध्रुवीय भालुओं का जीवन संकट में है। अल्बर्टा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एंज़्यू डेरोचर के नेतृत्व में किए गए अनुसंधान में पाया गया कि बर्फ पिघलने से बीते एक-डेढ़ साल के भीतर हडसन खाड़ी में पाए जाने वाले भालू सैकड़ों की संख्या में मरे हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि आर्कटिक में मौसम से पहले बर्फ की चट्टानें टूट रही हैं और फिर देर से जम रही हैं। जलवायु का यह परिवर्तन इन भालुओं की मौत का सबसे बड़ा कारण बन रहा है, इस कारण भोजन के लिए नियमित सील मछलियां नहीं मिल पा रही हैं।

ये भालू बर्फ की ठोस सतह के नीचे बह रही झीलों में



मौजूद सील मछलियों का शिकार करने में कुशल होते हैं। यही इनका प्रमुख भोजन है। डेरोचर के अनुसार पश्चिमी हडसन खाड़ी में ध्रुवीय भालू की आबादी 900 से 1000 है। डेरोचर और उनके 11 साथी शोधकर्ताओं ने दुनिया के राजनीतिक व

औद्योगिक नीतिकारों से अपील की है कि वे जल्द से जल्द आर्कटिक की प्राकृतिक संपदा व पारिस्थितिकी तंत्र को बचाए रखने के उपाय करें, अन्यथा इस भालू समेत अन्य ध्रुवीय जीवों की तादाद में भारी गिरावट आएगी। कई प्रजातियां तो लुप्त ही हो जाएंगी।

आर्कटिक के नीचे एक ऐसी बड़ी झील खोजी गई है, जिसमें मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड गैसों का अथाह भंडार है। इन्हीं ग्रीनहाउस गैसों के कारण आर्कटिक क्षेत्र में तापमान बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। आर्कटिक सागर की सतह और उसके तल के तापमान में 30 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक का अंतर है। ऐसी ही झीलें होने की आशंका उत्तरी ध्रुव के सुदूरवर्ती स्वालवार्ड में जताई जा रही है। यही गैसें तापमान बढ़ाती हैं, नतीजतन बर्फ पिघलती है और सील मछलियां या तो उस क्षेत्र में मर जाती हैं अथवा पलायन कर जाती हैं। परिणामस्वरूप भालुओं को भोजन नहीं मिलता और अंततः शिकार के अभाव में वे मर रहे हैं।

मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा पिछले साढ़े छह लाख वर्षों की तुलना में काफी बढ़ गई है। वैसे ग्रीनहाउस गैसों वायुमण्डल का हिस्सा हैं, जो ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करती हैं। कुछ ग्रीनहाउस गैसों वातावरण में प्राकृतिक रूप से पैदा होती हैं, जबकि अन्य मानवीय गतिविधियों का परिणाम हैं। जलवाष्प, कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और ओज़ोन प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाली ग्रीनहाउस गैसों हैं। इनमें

से कुछ गैसों अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप के कारण ज़्यादा मात्रा में उत्सर्जित होकर वायुमंडल का संतुलन बिगाड़ रही हैं। बड़ी तादाद में जीवाश्म ईंधन जलाने और वनों के नष्ट होने से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ रही है। भूमि का बड़ी मात्रा में आवास व खेती के लिए उपयोग, बड़े बांधों के कारण ज़मीन का दलदली होना, पाइप-लाइनों से रसायनों और गैसों के क्षरण और ढंके हुए मलयुक्त जल से भी अधिक मात्रा में मीथेन गैस निकलती है। पूरी तरह ढंके शौच-गड्ढों से गैस बाहर निकलने का पाइप के ज़रिए जो रास्ता बनाया जाता है, वह किण्वन की गति बढ़ाता है और इन कारणों से वायुमंडल में बड़ी मात्रा में मीथेन फैल जाती है।

इसके अलावा प्रशीतन और अग्निशमन में क्लोरोफ्लोरो कार्बन के उपयोग से भी प्रदूषण बढ़ा है। हैलोजन के साथ अक्रियाशील कार्बन यौगिकों का प्रयोग और खेती में रासायनिक खाद के इस्तेमाल से नाइट्रस ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती है। ये गैसों पृथ्वी के वायुमंडल में घुलकर उसे एक ग्रीनहाउस बना देती हैं और पृथ्वी से निकलने वाली गर्मी को रोक लेती हैं। यदि इनकी मात्रा बहुत अधिक हो जाती है तो तापमान खतरनाक स्तर तक बढ़ सकता है और जलवायु में आकस्मिक आपदा लाने वाले परिवर्तन हो सकते हैं। आर्कटिक और

स्वालवार्ड में कमोबेश यही हो रहा है। बढ़ते तापमान का असर भारतीय हिमालय पर भी पड़ रहा है। हिमालय के हिमनद या तो सिकुड़ रहे हैं या टूट रहे हैं।

ध्रुवीय भालू से मिलती-जुलती प्रजाति का सफेद भालू इन हिमखंडों के प्राकृतिक आवासों में रहता है। यह हिमाचल, लद्दाख, कश्मीर और उत्तराखंड में पाया जाता है। नेपाल में भी इसका आवास है। इसे अंग्रेज़ी में ब्राउन या स्नो बीयर कहते हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के हिमनद विशेषज्ञ डॉ. अनिल कुलकर्णी ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि हिमाचल प्रदेश के जिन 466 हिमनदों के उपग्रह चित्र लिए गए हैं, उनके नतीजे चौंकाने वाले हैं। इनमें से 162 हिमनदों का आकार सिकुड़ गया है। यदि हिमनद सिकुड़ने व खंडित होने का क्रम जारी रहा, तो हिमालयी भालू के प्राकृतिक आवास व आहार भी संकट में आ जाएंगे।

भालुओं के लिए जलवायु परिवर्तन का संकट तो नई खबर है, लेकिन इस बदलाव की जद में जलचर कीटभक्षी व पेंग्विन समेत दुनिया की 72 प्रतिशत पक्षी-प्रजातियां पहले ही आ गई हैं। स्पष्ट है कि ग्लोबल वार्मिंग ने जीव-जंतुओं पर कयामत ढाना शुरू कर दिया है और कालांतर में मनुष्य जाति भी इसके दायरे में आ जाने की आशंका है।  
(स्रोत फीचर्स)